सट्टे व शराब तस्करी के साथ-साथ बिजली चोरी व पानी का भी धंधा

फ़रीदाबाद (म.मो.) राजमार्ग व ओल्ड फ़रीदाबाद रेलवे स्टेशन के बीच बसे संतनगर में अनिल लोहिया व महिपाल सट्टे व अवैध रूप से शराब बेचने का धंधा करते हैं। बड़खल पुल के नीचे चलने वाले सट्टे के बंद हो जाने के बाद अनिल का धंधा काफ़ी बढ़ गया है। **'मज़दूर मोर्चा'** में इससे सम्बन्धित खबर छपने से वहां रहने वाले शरीफ़ लोग व खासकर महिलायें काफ़ी प्रसन्न थीं। उन्हें लगा था कि इस काले धंधे के प्रकाश में आने से उनकी बस्ती को इससे छुटकारा मिल जायेगा।

विदित है कि सट्टे व शराबखोरी करने वालों के घर पूरी तरह से बर्बाद हो जाते हैं जिसका सबसे बुरा प्रभाव महिलाओं व बच्चों पर पड़ता है। इस बस्ती में रहने वाले अधिकांश लोग निम्न वर्ग के हैं जों जहां-तहां दिहाड़ी पर मज़दूरी करके अपना परिवार पालते हैं। शीघ्र अमीर बनने के चक्कर में दिन भर की कमाई सट्टे में गंवा देते हैं और फ़िर गम भुलाने को शराब का सहारा लेते हैं। उधर पत्नी और बच्चे इन्तज़ार कर रहे होते हैं कि पापा राशन लेकर आयेगा। लेकिल पापा तो देर रात नशे में झूमता हुआ घर पहुंच कर बीवी-बच्चों पर अपना गुस्सा उतारता है। जहां रोटी तक के लाले पड़ते हों वहां शिक्षा व चिकित्सा की तो बात ही सोचना बेमानी है।

परंतु काला धंधा करके धन कमाने वालों को इस सब से क्या, उन्हें तो अपने मुनाफ़े से मतलब है, कोई बर्बाद होता है तो होता रहे। इस धंधे से दूसरा सबसे बड़ा खतरा नकली शराब का भी रहता है। जो ग़रीब आदमी सरकारी शराब नहीं खरीद सकता उसके लिये कच्ची शराब की आपूर्ति की सम्भावना से भी इंकार नहीं किया जा सकता। कच्ची एवं जहरीली शराब से होने वाली मौतें इसी तरह की बस्तियों में ऐसे ही तस्करों द्वारा उपलब्ध कराई जाती है। जब लोग मरने लगते हैं तब प्रशासन के हाथ-पांव फूलने लगते हैं। जांच के नाटक होने लगते हैं। लेकिन समय रहते कोई कुछ करने को तैयार नहीं।

सर्वविदित है कि यह काला धंधा पुलिस की मिलीभगत के बिना चल पाना संभव नहीं। थाना सेक्टर 17 व चौकी सेक्टर 16 के अन्तर्गत आने वाली इस बस्ती पर सीआईए वालों की भी नज़र रहती है। थाने वालों के अलावा वे भी अपनी मंथली वसूलना नहीं छोड़ते। हां दिखावे के लिये कभी-कभार इन ठिकानों से कुछ बोतलें व एक-दो कारिंदों को पकड़ कर मुकदमा दर्ज करने के साथ ही कारिंदों को जमानत पर छोड़ कर अपने कर्त्तव्य की इति श्री कर लेते हैं। उधर वे कारिंदे तुरंत थाने से वापस आकर अपने धंधे में जुट जाते हैं।

इसके अलावा अनिल ने पानी सप्लाई का अवैध धंधा भी चला रखा है। इसके लिये अवैध बोरिंग से पानी व चोरी की बिजली का इस्तेमाल किया जाता है। चोरी की इस बिजली से वह न केवल अपना धंधा चलाता है बल्कि बस्ती के कई घरों, दुकानों व रेहड़ी वालों को बेच कर अच्छी-खासी वसूली भी करता है। इस बस्ती में अपने पांव जमाने के लिये अनिल पूर्व मंत्री महेन्द्र प्रताप के नाम का भी जम कर इस्तेमाल करता है। इस बस्ती में स्थित मंत्री जी की जायदादों का किराया वसूली का जिम्मा उसके पास होने के चलते आम लोग़ों पर अनिल का अच्छा-खासा रौब चलना स्वाभाविक है। इसी रौब के बल पर वह उन रेहड़ियों से भी वसूली करता है जो सड़क पर खड़ी होती है, बेशक उस वसूली में से कुछ हिस्सा वह पुलिस को भी दे देता है। इसी के चलते राजीव चौक से रेलवे अंडर पास की ओर जाने वाली सड़क पर सदैव जाम लगा रहता है।

सुधी पाठक इस पर भी जरूर गौर करें

गोदी मीडिया सत्ता की गोद में बैठ कर खबरों को दबाने व भ्रमित करने का काम कर रहा हो तो 'मज़दूर मोर्चा' जैसे वैकल्पिक मीडिया को मजबूत करना आज की जरूरत है। पूरी चुनाव प्रक्रिया के दौरान सुधी पाठकों ने देखा होगा कि आपका यह छोटा सा मोर्चा किसी राजनेता का भोंपू नहीं बना, किसी का यशोगान नहीं किया और न ही किसी के विज्ञापन छापे।

'मज़दूर मोर्चा' केवल पाठकों के सहयोग से चलने वाला साप्ताहिक है। पाठक ही इसके संवाददाता हैं और पाठक ही संरक्षक। आपका यह साप्ताहिक और अधिक एवं सटीक खबरें आप तक पहुंचा सके इसके लिये आपके आर्थिक सहयोग की सख्त जरूरत है। 'मज़दूर मोर्चा' एक व्यक्ति से 100 रुपये चंदा लेने की अपेक्षा सौ लोग़ों से एक-एक रुपये का सहयोग लेना अधिक पसंद करता है। अत: अपनी आवाज़ को बुलंद करने व दबी-छिपी तमाम खबरों को जानने के लिये 'मज़दूर मोर्चा' को यथा-शक्ति आर्थिक सहयोग करें।

खबरों को संकलित करने के लिए कम से कम एक लैपटॉप की सख्त आवश्यकता है। समर्थ पाठक इस दिशा में सहयोग करें तो बड़ी मेहरबानी होगी। धन्यवाद। -सम्पादक

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी भी शाखा में

खाता संख्या : 451102010004150, IFSC CODE : UBIN0545112

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें, कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ़ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें।

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. **आनंद मैगजीन सैंटर केसी रोड, एनएच-5**
2. **प्रिंट फोर्ट, टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड**
3. **रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन**
4. **एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे**
5. **राम खिलावन बल्लबगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने**
6. **हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास**
7. **जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207**

गतांक की चीर-फ़ाड़

एक भयावह प्रेस कांफ्रेस

डॉ. जुगल किशोर गुप्ता

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आरएसएस) और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) जहां उसका प्रभाव नहीं है वहां अपने पैर फ़ैलाने के लिये साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण और लोग़ों में भय पैदा करने के लिये लगातार आक्रामक प्रयास करते रहते हैं। इसी कड़ी में पश्चिमी बंगाल में धार्मिक ध्रुवीकरण और डर उत्पन्न करने के लिये हर प्रकार के हथकंडे अपनाये जा रहे हैं। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह ने कलकत्ता रैली से पहले पश्चिम बंगाल सरकार और पुलिस को खुली चुनौत दी कि वे श्री राम का नारा लगाने कलकत्ता जा रहे हैं और जो उखाड़ सकें उखाड़ ले। शाह के रोड शो से पहले हिंसा तय थी। भाजपा के 'फाटफटी ग्रुप' के नेतृत्व में अन्य राज्यों से लाए गए गुंडे मवालियों ने 14 मई के शाह के रोड शो के दौरान हिंसात्मक व अराजकता फ़ैलाने में कोई कसर नहीं छोड़ी, रामलीला की तरह धार्मिक जुलूस निकाला गया तथा ईश्वरचन्द्र विद्यासागर महाविद्यालय पर आक्रमण करके वहां स्थित विद्यासागर की प्रतिमा को तोड़ दिया और चुनाव आयोग व चुनाव आचार संहिता की धज्जियां उड़ा दी, जिसका 'कोलकत्ता में हिंसा व मूर्ति तोड़ने की कालगुजारी अमितशाह की देख-रेख में हुई-दूसरे राज्यों से भेजे गये गुंडे -मवालियों ने पश्चिमी बंगाल में अराजकता फैलाई' तथा 'दोगलापन' में तथ्यात्मक विवेचन किया गया है। इस हिंसा के लिये भाजपा व तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) दोनों ने एक दूसरे पर दोषारोपण किया, परंतु टीएमसी नेता डेरेक ओब्रायन तथा आल्ट न्यूज द्वारा जारी वीडियो से शाह व भाजपा के झूठ की कलई खुल गई है।

मज़दूर मोर्चा के 19-25 मई 2019 के अंक में राजनीतिक, प्रशासनिक, आर्थिक, साहित्यिक व शैक्षिक मुद्दों पर अनेक महत्वपूर्ण समाचार प्रकाशित हुए हैं। दैनिक समाचार पत्रों (हिंदी) व सोशल मीडिया में स्थानीय राजकीय महिला महाविद्यालय की छात्राओं के यौन-शोषण का मामला सुर्खियों में है। एक छात्रा ने जूनियर लैब असिस्टेंड जगदेव व चपरासी का नाम लिखकर इस मामले की शिकायत प्राचार्य नरेन्द्र कुमार को सौंपी थी, जिसकी जांच के दौरान एसोसिएट प्रोफ़ेसर चन्द्रशेखर वशिष्ठ का नाम भी जोड़ा गया तथा साथ ही कॉल रिकॉर्डिंग व वीडियो रिकॉर्डिंग भी सौंपी गयी थी। छात्रा ने आरोप लगाया था कि यह तिकड़ी पेपरों में पास कराने का झांसा देकर छात्राओं का यौन शोषण करती है और प्रोफ़ेसर वशिष्ठ छात्राओं से दुर्व्यवहार करते हैं तथा ट्यूशन पढने के लिये दबाव बनाते हैं। प्राचार्य द्वारा नियुक्त पांच महिला प्रोफ़ेसरों की स्पेशल जांच समिति की जांच रिपोर्ट हरियाणा हायर एजुकेशन डिपार्टमेंट को दे दी गई था।

मानवाधिकार आयोग, महिला व बाल विकास विभाग हरियाणा महिला आयोग की टीमें भी मामले की जांच के लिये आई तथा हरियाणा हायर एजुकेशन डिपार्टमेंट की तीन सदस्यीय कमेटी ने कॉलेज में आकर पूरे स्टाफ़ व शिकायत कर्ता छात्रा से बात-चीत करके उनसे बयान लिये। कॉलेज की छात्राओं के प्रतिनिधियों ने भी लिखित में उन्हें शिकायत दी, जिनमें प्रोफ़ेसर वशिष्ठ के दुर्व्यहार व उनकी आधिकारिक प्रवृत्ति सम्बन्धित मुख्य शिकायतें थी। आरोपितों की हरकतों के बारे में पूछताछ करने पर टीचिंग व नॉन टीचिंग स्टाफ़ दो खेमों में बंटा नज़र आया। छात्राओं ने वशिष्ठ के घोटालों का सतही हवाला दिया लेकिन किसी विशिष्ठ घोटाले का जिक्र नहीं किया। घोटाले तो इस कॉलेज में आम बात हो गई है। तत्कालीन प्रचार्या भगवती राजपूत व उसके सहायक ने कॉलेज के पेड़ कटवाकर लकड़ी बेच डालने का घोटाला किया, जिसका 'छात्राओं को लचर व्यवस्था के भरोसे न रहकर खुद निपटना होगा' में खुलासा किया गया है।

शिकायतकर्ता छात्रा ने वीडियो व ऑडियो पुलिस को सौंपे थे। पुलिस ने छात्रा से बयान लिये और जांच अधिकारी के अनुसार शुरूआती जांच में लैब अटेंडेंट जगदेव के खिलाफ़ सबूत पाये गए हैं। 'मज़दूर मोर्चा' ने इस पूरे प्रकरण के पीछे प्रोफ़ेसर वशिष्ठ तथा प्रचार्य नरेन्द्र कुमार के विरुद्ध प्रोफ़ेसरों की आपसी गुटबाजी की साज़िश का 'राजकीय महिला कॉलेज का हाई-वोल्टेज ड्रामा-प्रोफ़ेसरों की गुटबाज़ी ने उल्लू सीधे करने में छात्राओं को बनाया हथियार' के जरिये पर्दाफ़ाश किया गया है। गौरतलब है कि छात्रा की मूल शिकायत में प्रोफ़ेसर वशिष्ठ का नाम नहीं था, जो बाद में कॉलेज की जांच कमेटी की जांच के दौरान जोड़ा गया। मामले को उछालने के लिये तिगांव के राजकीय महाविद्यालय के लड़कों को भेजकर प्रदर्शन प्रायोजित किया गया जिसमें मौजूदा प्राचार्य नरेन्द्र बदनाम हो जाये और उसका यहां से ट्रांसफ़र हो जाए ताकि सीट खाली हो। हरियाणा टायर एजुकेशन डिपार्टमेंट की टीम द्वारा जांच के दौरान स्टाफ? की आपसी गुटबाज़ी सामने आई थी।

इस प्रकरण के नवीनतम घटनाक्रम में हरियाणा पुलिस के डायरेक्टर जनरल ने छात्राओं के यौन शोषण के मामले का संज्ञान लेते हुये सेक्टर 16 ए के महिला थाने में दर्ज केस में तीनों आरोपियों की गिरफ़्तारी का जिम्मा क्राइम ब्रांच-30 को दे दिया, जिसके बाद क्राइम ब्रांच ने 22 मई को आरोपित चपरासी विक्रम को गिरफ़्तार कर लिया। वहीं, दूसरी तरफ़ ज़िला अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश की कोर्ट ने आरोपित प्रोफ़ेसर वशिष्ठ की अग्रिम जमानत की याचिका पर राहत देने से इन्कार कर दिया। उच्चतर शिक्षा निदेशालय ने 22 मई को प्राचार्य नरेन्द्र कुमार के निलंबन आदेश जारी कर दिए, लेकिन सस्पेंड करने की वजह निदेशालय ने स्पष्ट नहीं की। इस मामले में तीनों आरोपित पहले ही निलंबित किए जा चुके हैं।

पाठकों को स्मरण होगा कि लगभग 10 वर्ष पूर्व पड़ोस के नेहरू कॉलेज की एक छात्रा ने एसोसिएट प्रोफ़ेसर के विरुद्ध यौन शोषण का आरोप लगाते हुए शिकायत की थी। तत्कालीन प्राचार्य ने उस शिकायत को हरियाणा हायर एजुकेशन डिपार्टमेंट को भेज दिया था। परंतु राजनीतिक व प्रशासकीय प्रभाव डालकर छात्रा से बयान बदलवा लिये और मामले को समाप्त कर दिया। लेकिन तत्कालीन प्राचार्य का फ़रीदाबाद से ट्रांसफ़र कर दिया गया जबकि उनके रिटायरमेंट में कुछ ही माह बचे थे।

छात्राओं को यौन शोषण की शिकायत और इसके पीछे साज़िश की एक स्वतंत्र व निष्पक्ष जांच एजेंसी से जांच करवाने की आवश्यकता है जिससे दोषी व्यक्ति को सज़ा मिल सके तथा इस प्रकरण की वास्तविकता सामने आ सके।

इस सारे मामले में चुनाव आयोग मूक दर्शक बना रहा और प्रधानमंत्री मोदी व शाह द्वारा आचार संहिता का चीर-हरण किया जाता रहा। इससे भी ऊपर चुनाव आयोग ने मोदी जी को 16 मई की रैली करने का पर्याप्त मौका दिया और उसी रात के 10 बजे से पश्चिमी बंगाल में चुनाव-प्रचार बंद करने का आदेश दे दिया, जिसकी 'गुलाम आयोग' में समीक्षा की गई है।

'ईश्वरचन्द्र विद्यासागर से भाजपा को नफ़रत क्यों?' के जरिये आरएसएस व भाजपा की समाज सुधारक, विचारक व शिक्षा विद् ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के प्रति नफ़रत के कारणों का सटीक विश्लेषण किया गया है। विद्यासागर जी ने अपना सारा जीवन सभी लोग़ों के लिये सस्ती और वैज्ञानिक शिक्षा उपलब्ध कराने उनको ब्राह्मणवाद की जकड़ से मुक्त कराने में लगाया। उन्होंने अंग्रेजों से मिलकर विधवा विवाह के लिये कानून बनवाया व सती प्रथा का विरोध किया और लड़कियों की शिक्षा के लिये स्कूल खोले। इसलिये उनको पूरे बंगाल में ब्राह्मणों का विरोध झेलना पड़ा लेकिन वे आम लोग़ों में लोकप्रिय बने रहे। इन्हीं ब्राह्मणवाद विरोधी कार्यों के कारण वे आज भी आरएसएस व भाजपा के निशाने पर हैं। इसलिये सुनियोजित ढंग से शाह के नेतृत्व में बाबरी मस्जिद की तरह विद्यासागर की मूर्ति को ध्वस्त किया गया।

आजादी के आंदोलन के दौर से आरएसएस का मुख्य मिशन महात्मा गांधी को नीचा दिखाने का रहा है। स्वतंत्रता के बाद और विशेषकर पिछले पांच वर्ष में आरएसएस व भाजपा ने अपने राजनीतिक मिशन की तरह इसे आगे बढाया है। वे अपने छोटे नेताओं से गांधी जी की आलोचना करवाते हैं व गांधी जी के हत्यारे नाथूराम गोडसे को देशभक्त बताते हैं और जब विरोध होने लगता है तो उसका निजी विचार बताकर उससे किनारा करने की कोशिश करते हैं (उदाहरण स्वरूप भोपाल से भाजपा प्रत्याशी प्रज्ञा ठाकुर), 'जिसको' 'गांधी को गाली दो, गोडसे को देशभक्त बताओ....तुम्हारे पास काम ही क्या है-बहुसंख्यक तुष्टिकरण के ढोंग पर चलते हुए संघ का मुख्य मिशन गांधी को नीचा दीखाना है' के जरिये उजागर किया गया है।

प्रधानमंत्री मोदी ने अपने पांच वर्ष के कार्यकाल में पहली प्रेस-कांफ्रेस भाजपा मुख्यालय में आयोजित की जिसमें भारी तादाद में प्रेस संवाददाता पहुंचे, परंतु उनको निराशा हाथ लगी जब मोदी जी ने किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं दिया और यह काम अमितशाह पर छोड़ दिया, जिसकी 'एक भयावह प्रेस कांफ्रेस' में चर्चा की गई है। तथाकथित प्रेस कांफ्रेंस से सटीक निष्कर्ष निकाला गया है कि शासन की बागडोर तो किसी और के ही हाथ में थी लेकिन इस व्यक्ति को सत्ता का प्रयोग करना बखूबी आता है।

'जय काली कलकत्ता वाली 56 इंच की हवा निकाली' सर, जनता जानना चाहती है कि हमारे प्रधानमंत्री आम खाते हैं...? आप जानते हैं कि मैं बचपन में बहुत गरीब था; सर, जनता जानना चाहती है कि हमारे प्रधानमंत्री बटुआ रखते हैं...? आप जानते हैं कि मैं बचपन में बहुत गरीब था...', 'जो नहीं बदल रहा उनकी लिस्ट लाना तो ...', 'मोदी अबकी बार पक्का अच्छे दिन वोटर', 'राहुल गांधी ने पीएम मोदी को गले लगाया बस इतना बता दीजिये कि मुझे कितनी और मेहनत करनी पड़ेगी, कुर्सी खाली कब करोगे?', 'एक ने अंग्रेजों से माफ़ी मांगी और वीर हो गया, दूसरा सलवार पहनकर भागा और अमीर हो गया तथा तीसरा-दस लाख का सूट पहन कर फ़कीर हो गया', 'बिलीव मी, देयर वाज एण्ड देयर इज नो शोरटेज ऑफ़ ऑक्सीजन-गोरखपुर' तथा 'भाई साहब! गंगा की सफ़ाई में करोड़ों साफ़-नोटिस बहती गंगा में हाथ धोना मना है (जांच अधिकारी)' कार्टूनों द्वारा मोदी व योगी सरकार पर उपयुक्त कटाक्ष किया गया है।